एकांकी

डॉ. दिग्विजय नरायन
असि. प्रोफेसर- हिंदी
इन्दिरा गांधी राजकीय स्नो.महा.
बांगरमऊ, उन्नाव
सेमेस्टर-III

एकांकी एक ऐसी पूर्ण नाटकीय रचना है, जिसमें मानव-जीवन के किसी एक पक्ष एक चरित्र एक समस्या और एक भाव की अभिव्यक्ति होती है। एकांकी का साधारण अर्थ है एक अंक वाला नाटक। लेकिन नाटक से एकांकी की कला और रोली भिन्न है। दोनों में

अनुकरण तत्व की प्रमुखता है, दोनों में वस्तु चरित्र संवाद आदि रहते है, किंतु उनके प्रस्तुतीकरण में अन्तर है।

एकांकी के दो प्रकार होते है।

1.एक ही दृश्य रस्ता है और एक ही दृश्य-पट पर सारा एकांकी अभिनीत होता है।

2. दूसरे प्रकार के एकांकी वे हैं जिनमें अनेक दृश्यों की योजना रहती है।

किन्तु आज पहले प्रकार के एकांकी की ही अधिक प्रचलित हैं।

एकांकी में कथावस्तु की लगता रहती है विस्तार नहीं। यहाँ केवल अधिकारिक कथा होती है और वह भी अत्यन्त संक्षिप्त । यह कथा किसी घटना के मार्मिक स्थल से आरम्भ होकर जिताया और कुतुहल को जगाती हुई विस्मयपूर्ण स्थिति में समाप्त हो जारी है। एकांकी की कथा साधारणतः जिज्ञासा जगाती है, उसका शमन नाही करती । नाटक की क्या में ऐसी बात नहीं होती उसकी सारी कथा किसी एक स्थान की होती है। आरम्भ से अन्त तक स्थान की एकता बनी रहती है इतका अन्त आकस्मिक होता है।

नाटक की तरह एकांकी में चरित्र अधिक नहीं होते । यहाँ पाच-वह से अधिक चरित्र नहीं होते।चरित्रों में भी केवल नायक की प्रधानता रहती है,अन्य चरित्र उसके व्यक्तित्व को अग्रसर करते है।यहाँ प्रतिनायक की कल्पना सामान्यतः नहीं रहती। नायक स्वयं अपने उत्थान-पतन के लिए उत्तरदायी है। एकांकी में विदूषक की कल्पना नहीं की जाती क्योंकि एकांकी की कथावस्तु में इसके लिए स्थान ही नहीं होता। हास्य, व्यंग्य और विनोद का काम उसके चरित्रों के संवादोंसे ही चल जाता है। एकाकी के चरित्र को संजीव,व्यक्तिवादी और प्रभावशाली होना चाहिए। यहीं चरित्र एक ऐसा बिन्द है, जो अपने चारों ओर कृतया घेरा बनाता जाता है। अतएव, पटनामें के उत्थान-पतन की कोई आवश्यकता नहीं पडती चरित्र का निर्माण उसके संस्कार मनोविज्ञान और वातावरण के अनुसार होता है। प्राचीन नाटकों की तरह यहाँ नायक था पात्रों का कोई बना बनाया साँचा नहीं होता है नायक के लिएसर्वगुण सम्पन्न होना भी आवश्यक नहीं । वह तो एक साधारण व्यक्ति हैं, जो साधारण लोगों कीरह सुख-दुःख के बीच जीवन बिताता है अधिकतर एकाकियों में चरित्र की मानसिक नियति द्वन्द्वात्मक होती है। उसे अन्तहुन् और बाह्यहुन् से संघर्ष करता हुमा दिखलाया जाता है ऐसे चरित्र बहे स्वाभाविक औरजीवन्त होते हैं वास्तव में एकांकी चित्र के माध्यम से:आज के हुन्छपूर्ण जीवन को व्यक्त करता है।

संवाद एकांकी का प्राण है। इसीके सहारे एकांकी की कारावास और चरित्र का निर्माण होता है।कुशाल एकांकी-लेखक यदि संवाद लिखने में प्रवीणन हुआ, तो एकांकी का कोई प्रभाव पाठकों या दूरीको हैपर नहीं पडेगा इसके संवाद स्वाभाविक, संधिवात बागवे- अर्ध्यपूर्ण रोचक और प्रभावोंसंपादक होने चाहिए। एकोकी की भाषा कविता की भाषा नहीं होती। भाषा पात्रों की मनोवृत्ति और कथा की प्रकृति के अनुसार होनी चाहिए लेकिन साधारणतः इसे सरल सुबोध और प्रवाह पूर्ण होना चाहिए वाक्यों की रचना में कृत्रिम- ता या अलंकृत नहीं चाहिए । एकको कीकार को शब्दों केप्रयोग में मितव्ययी होना चाहिए।एकांकी की कला नाटक की तरह अनुकरणार्मक है, इसलिए एकांकी को अभिनय होना चाहिए। जो एकांकी रंगमंच पर सफलतापूर्वक नहीं खेला जा सकता, वह सही अर्थ में एकांकी नहीं है इसलिए एकांकीकार को अभिनय और रंगमंच का ज्ञान होना चाहिए। तभी वह सफल एका कियों की रचना कर सकता है। वस्तुतः एकांकी के तीन तत्व है जिनकी सहायता से इतकी रचना होती है ने हैं-कथा चरित्र और संवाद इनका विवेचन ऊपर किया जा चुका हैं साहित्य की यह विधा आज काफी लोकप्रिय है। इतका भविष्य भी उज्ज्वल है।